Em – जो कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा उसे
कभी क्षमा नहीं किया जाएगा मत्ती १२:३०-३७ और मरकुस ३:२८-३० |
1

– Save This Page as a PDF–

जो कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा उसे कभी क्षमा नहीं किया जाएगा

मत्ती १२:३०-३७ और मरकुस ३:२८-३०

खोदाई: रुआच के खिलाफ ईशनिंदा का क्या मतलब है? यहाँ संदर्भ क्या है? फरीसियों ने वह पाप कैसे किया? चूँकि क्षमा माँगी जानी चाहिए, तो इस पाप को क्षमा किया जाना असंभव क्यों है? क्या लोगों को उनके पापों के कारण नरक भेजा जाता है? पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा के दो पहलू क्या हैं? यीशु की पीढ़ी के लिए इसका क्या मतलब है? क्या यह आज प्रतिबद्ध हो सकता है?

चिंतन: बुराई के विरुद्ध आपके दैनिक संघर्ष में मसीह की शक्ति क्या वास्तविक अंतर लाती है? ईश्वर के प्रति ईमानदार होने की आपकी स्वतंत्रता में? जिस तरह से आप दूसरों से बात करते हैं? हमें घमंड और आत्म-धार्मिकता के प्रति जागरूक रहने की जरूरत है, लेकिन क्या आपको इस बात की चिंता करने की जरूरत है कि आप कोई ऐसा पाप कर रहे हैं जिसे माफ नहीं किया जा सकता?

राक्षसों के कब्जे के आधार पर सैन्हेड्रिन द्वारा अस्वीकार किए जाने के बाद (देखें Ek – यह केवल राक्षसों के राजकुमार बील्ज़ेबूब द्वारा है, कि यह साथी राक्षसों को बाहर निकालता है), यीशु ने फरीसियों को स्पष्ट कर दिया कि अब तक कोई तटस्थ आधार नहीं है जहाँ तक उसके साथ संबंध रखने का संबंध है। कुछ अंशों की इनसे अधिक गलत व्याख्या और गलत समझा गया है। लेकिन, चूँकि उन्हें ग़लत समझने के परिणाम सामने आते हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम उन्हें सही ढंग से समझें। पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा के दो अनुप्रयोग हैं।

सबसे पहले, यीशु ने उसे मसीहा के रूप में अस्वीकार करने के अनोखे पाप का दोषी होने के लिए इज़राइल की उस विशिष्ट पीढ़ी पर एक विशेष दिव्य निर्णय सुनाया। अक्षम्य पाप पवित्र आत्मा की निंदा करना या उसे अस्वीकार करना है। चूँकि यह अक्षम्य था, इसलिए उस पीढ़ी के विरुद्ध निर्णय दिया गया। इसका फैसला चालीस साल बाद ७० ईस्वी में यरूशलेम और मंदिर के भौतिक विनाश के साथ आएगा।

इस फैसले के चार प्रभाव होंगे. प्रथम, उस समय यह कोई व्यक्तिगत पाप न होकर राष्ट्रीय पाप था। उस पीढ़ी के व्यक्तिगत सदस्य फैसले से बच सकते थे और बच भी गये। दूसरे, यह एक ऐसा पाप था जो यहूदियों की उस विशिष्ट पीढ़ी के लिए अद्वितीय था जिसने मसीह को अस्वीकार कर दिया था और इसे यहूदियों की किसी अन्य पीढ़ी पर

Em – जो कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा उसे
कभी क्षमा नहीं किया जाएगा मत्ती १२:३०-३७ और मरकुस ३:२८-३० |
2

लागू नहीं किया जा सकता है। इस पीढ़ी के वाक्यांश पर नज़र रखें। यह बार-बार होता है. तीसरा, यह कोई पाप नहीं था जिसे कोई दूसरी पीढ़ी कर सके। यीशु वर्तमान में किसी अन्य राष्ट्र के मसीहा के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करने के लिए शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हैं। चौथा, क्योंकि यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया था इसलिए इसे रद्द कर दिया गया। वह पीढ़ी अपने समय में स्थापित मसीहा साम्राज्य को देखने से चूक गई, लेकिन इसे दूसरी यहूदी पीढ़ी को पेश किया जाएगा जो इसे स्वीकार करेगी। यह महान क्लेश की यहूदी पीढ़ी होगी (प्रकाशित वाक्य पर मेरी टिप्पणी देखें Ev – यीशु मसीह के दूसरे आगमन का आधार)।

यीशु ने अपनी ही पीढ़ी को न्याय की गंभीर चेतावनी जारी की: जो कोई मेरे साथ नहीं है वह मेरे विरुद्ध है, और जो मेरे साथ इकट्ठा नहीं होता वह मेरे पास से तितर-बितर हो जाता है (मत्ती १२:३०)। ईसा मसीह के साथ और इसलिए ईश्वर के साथ केवल दो संभावित रिश्ते हैं। आप या तो उसके साथ हैं या उसके ख़िलाफ़ हैं। वहां कोई मध्य क्षेत्र नही है। काला या सफेद। बहुमूल्य गोद लिया हुआ बच्चा या हमेशा के लिए नरक में निर्वासित। यह थोड़ा सा गर्भवती होने जैसा है। आप नहीं कर सकते आप या तो गर्भवती हैं या आप नहीं हैं। आध्यात्मिक भोजन केवल दो प्रकार के होते हैं। वहाँ केवल देवदूत का भोजन या शैतान का भोजन है – और यदि आप एक नहीं खा रहे हैं, तो आप दूसरा खा रहे हैं! यदि आप चाहें तो येशुआ को केवल एक दयालु व्यक्ति, एक अच्छे शिक्षक, ईश्वर के एक महान व्यक्ति के रूप में स्वीकार करना असंभव है, और इससे अधिक कुछ नहीं। अपनी मृत्यु पर, प्रभु ने साबित कर दिया कि वह ईश्वर का पुत्र था, जिसके पास बीमारी, पाप, राक्षसों, दुनिया और शैतान पर अधिकार था।

प्रेरितों को यह समझने में कठिनाई हुई कि उनका स्वामी वास्तव में ईश्वर का पुत्र था। उसने खाया, पिया, सोया और उनकी तरह ही थक गया। इसके अलावा, उनके कई कार्य ईश्वरीय नहीं लगते थे। नाज़रीन ने लगातार स्वयं को विनम्र बनाया और दूसरों की सेवा की। उसने अपने लिए कोई सांसारिक महिमा नहीं ली, और जब दूसरों ने उस पर इसे थोपने की कोशिश की, तो चमत्कार करने वाले रब्बी ने इसे प्राप्त करने से इनकार कर दिया – जैसे कि जब भीड़ ने नाटकीय रूप से ५,००० लोगों को खाना खिलाया था, तो वह उसे राजा बनाना चाहती थी (देखें Fo – यीशु ने अस्वीकार कर दिया एक राजनीतिक मसीहा का विचार)। मसीहा के आंतरिक दायरे से बाहर के लोगों के लिए उसके देवता की सराहना करना और भी कठिन था। यहां तक कि जब उन्होंने अपने महानतम चमत्कार किये, तब भी उन्होंने ऐसा बिना आडंबर या चकाचौंध के किया। येशुआ हमेशा एक मानव प्रभु की तरह भी नहीं दिखता था या कार्य नहीं करता था, दिव्य ईश्वर की तरह तो दूर की बात है।

दूसरे, येशुआ ने आज लोगों को चेतावनी दी है कि यदि रुआच द्वारा उनकी सच्चाई से अवगत कराने के बाद भी वे जानबूझकर पाप करना जारी रखते हैं, तो पाप के लिए कोई बलिदान नहीं बचा है। और इसलिए मैं तुमसे कहता हूं, लोगों को उनके सभी पापों और उनके द्वारा कही गई हर निंदा को माफ किया जा सकता है; भले ही वे मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध एक शब्द भी कहें (मत्ती १२:३१क; मरकुस ३:२८)। यहाँ पाप अनैतिक और

Em – जो कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा उसे
कभी क्षमा नहीं किया जाएगा मत्ती १२:३०-३७ और मरकुस ३:२८-३० |
3

अधर्मी विचारों और कार्यों की पूरी श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य का पुत्र प्रभु की मानवता को दर्शाता है। खोए हुए लोगों की गलत धारणा हो सकती है जो उन्हें मसीह के ईश्वरत्व को देखने की अनुमति नहीं देती है। यदि वे दोषपूर्ण धारणा के आधार पर उस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं और मुक्तिदाता के मानवता के खिलाफ बोलते हैं, तो मनुष्य के पुत्र के खिलाफ ऐसे शब्द को माफ किया जा सकता है, यदि पूर्ण प्रकाश प्राप्त करने के बाद, वे उसके देवता की सच्चाई पर विश्वास करते हैं। वास्तव में, क्रूस से पहले जीवन के प्रभु को नकारने और अस्वीकार करने वाले कई लोगों ने बाद में सच्चाई देखी कि वह कौन थे और क्षमा मांगी और बचाए गए।



परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में निन्दा
करेगा उसे कभी क्षमा न किया जाएगा; वे अनन्त पाप के दोषी हैं। उसने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वे कह रहे थे, “उसमें अशुद्ध आत्मा है” (मत्ती १२:३१बी; मरकुस ३:२९-३०)। निन्दा पवित्र आत्मा को अस्वीकार करने का एक सचेत निर्णय है जो गवाही देता है कि यीशु पापियों का उद्धारकर्ता है। यह कोई अज्ञानतापूर्ण अस्वीकृति या दोषपूर्ण धारणा पर आधारित अस्वीकृति नहीं है। नहीं, यह येशुआ के मसीहापन और देवता के हर संभावित सबूत के सामने घुटने टेकने और यह स्वीकार करने से इंकार है कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं (फिलिप्पियों २:१०-११)। वे कहते हैं नहीं. अविश्वास के लिए कभी भी पर्याप्त सबूत नहीं होते। उन्हें कभी माफ़ नहीं किया जाएगा क्योंकि वे उस रास्ते पर चलने को तैयार नहीं हैं जो माफ़ी की ओर ले जाता है। चोर, व्यभिचारी और हत्यारे के लिए आशा है। खुशखबरी उन्हें चिल्लाने पर मजबूर कर सकती है: हे ईश्वर, मुझ पापी पर दया करो (लूका १८:१३)। परन्तु जब कोई इस हद तक कठोर हो जाता है कि वह आत्मा की उपेक्षा करने का मन बना लेता है, तो वह अपने आप को उस मार्ग पर खड़ा कर लेता है जो नरक की ओर जाता है। यदि हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी पाप करते रहते हैं, तो पापों के लिए कोई बलिदान नहीं बचा है, लेकिन केवल न्याय और प्रचंड आग की भयावह उम्मीद है जो परमेश्वर के शत्रुओं को भस्म कर देगी। जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना एक भयानक बात है (इब्रानियों १०:२६-२७, ३१)।

जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कुछ भी कहेगा, उसका अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरोध में कुछ भी कहेगा, उसका अपराध न तो इस युग में और न आने वाले युग में क्षमा किया जाएगा (मत्ती १२:३२)। येशुआ ने

Em – जो कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा उसे
कभी क्षमा नहीं किया जाएगा मत्ती १२:३०-३७ और मरकुस ३:२८-३० |
4

मेशियाच के बारे में रुआच हाकोडेश की शिक्षा के संबंध में हमारे शब्दों के महत्व पर जोर दिया। क्या यीशु वास्तव में राजा मसीहा है जिसे पिता ने भेजा है, या वह शत्रु के राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाला एक झूठा शिक्षक है? आत्मा के इस कार्य के संबंध में हमारे शब्दों के द्वारा ही हम या तो बरी किये जायेंगे या दोषी ठहराये जायेंगे। हमारे समय में कई लोग कहते हैं कि येशुआ हमारा मसीहा नहीं है। लेकिन आप क्या कहते हैं? या जैसा कि यीशु ने बारहों से पूछा: तुम्हारे बारे में क्या? तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं (मत्ती १६:१५)? हमारे शब्द और कार्य इस बात की गवाही दें कि हम मानते हैं कि वह हमारा व्यक्तिगत प्रभु और उद्धारकर्ता है।

यह युग और आने वाला युग यहूदी शब्द हैं जो मुख्य रूप से जीवन के क्रमिक चरणों के बजाय इस जीवन और अगले जीवन के बीच विरोधाभास पर लागू होते हैं। इस युग (ग्रीक आयन) का अर्थ “दुनिया” (ग्रीक: कोस्मोस) जैसा ही है, जिसे ईश्वर से अलग एक सांसारिक वास्तविकता माना जाता है। मत्तित्याहू में इस शब्द का प्रयोग विशेष रूप से आयन के अंत (या पूर्ति) वाक्यांश में किया जाता है, जिसे हम मत्ती १३:३९-४०, २४:३ और २८:२० में देखते हैं। आयन के उस अंत से जो निकलता है वह आने वाला आयन है जो इस युग के निर्णय के दूसरी तरफ स्थित है। यहाँ, फिर, अक्षम्य पाप के परिणाम न केवल इस जीवन पर बल्कि आने वाले जीवन पर भी लागू होते हैं, जब उन सभी लोगों का न्याय किया जाएगा जो मसीहा में विश्वास करने से इनकार करते हैं, उनका न्याय महान श्वेत सिंहासन पर किया जाएगा (प्रकाशित वाक्य पर मेरी टिप्पणी देखें Fo– महान श्वेत सिंहासन निर्णय)।

आज अक्षम्य पाप केवल अविश्वास नहीं है, बल्कि दृढ़ अविश्वास है। यह सभी आवश्यक सबूतों को देखने के बाद, एक सूचित निर्णय लेने के लिए पर्याप्त प्रकाश होने के बाद, यहाँ तक कि मसीहा पर विश्वास करने पर विचार करने से भी इनकार है, वे अपने दिलों को इस हद तक कठोर कर लेते हैं कि वे परमेश्वर के बारे में सच्चाई को झूठ से बदल देते हैं (रोमियों १:२५ए). हर संभव सबूत के सामने कि मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, कि उसे दफनाया गया था, कि वह पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन उठाया गया था, वे नहीं कहते हैं (प्रथम कुरिन्थियों १५:३बी-४)। और उनकी सचेत पसंद के परिणामस्वरूप, ईश्वर (क्योंकि वह मानव जाति की स्वतंत्र इच्छा का उल्लंघन नहीं करेगा) उनके लिए और कुछ नहीं कर सकता। वह जो कुछ कर सकता था, उसने क्रूस पर किया। उसका बहाया हुआ खून उनके लिए पर्याप्त नहीं है। यद्यपि इससे उसका दिल टूट जाता है, वह उसे अस्वीकार करने की उनकी पसंद का सम्मान करेगा, और परिणामस्वरूप, वे हमेशा के लिए माफ नहीं किये जायेंगे।

इसलिए, मुख्य मुद्दा प्रकाश है. ईश्वर की निन्दा करने वाले अविश्वासी को क्षमा किया जा सकता है। जब लोग मसीह के ईश्वरत्व के साक्ष्य से कम संपर्क के साथ जीवन के प्रभु को अस्वीकार करते हैं, तब भी उन्हें उस पाप को माफ किया जा सकता है यदि वे इसे स्वीकार करते हैं और पश्चाताप करते हैं। रब्बी शाऊल ने कबूल किया कि भले ही मैं एक समय ईशनिंदा करने वाला, उत्पीड़क और हिंसक आदमी था, फिर भी मुझ पर दया

Em – जो कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा उसे
कभी क्षमा नहीं किया जाएगा मत्ती १२:३०-३७ और मरकुस ३:२८-३० |
5

की गई क्योंकि मैंने अज्ञानता और अविश्वास में काम किया था। हमारे प्रभु का अनुग्रह मुझ पर बहुतायत से बरसा, और साथ ही मसीह यीशु में विश्वास और प्रेम भी। . . मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आये – जिनमें से मैं सबसे बुरा हूँ (प्रथम तीमुथियुस १:१३-१५)। पतरस ने शाप देकर मसीह की निन्दा की (मरकुस १४:७१), और उसे क्षमा कर दिया गया और बहाल कर दिया गया (देखें Mn – यीशु ने पतरस को बहाल किया)। और उनमें से कई लोगों ने, जिन्होंने मेशियाक को उसके सांसारिक मंत्रालय के दौरान अस्वीकार कर दिया था, बाद में सच्चाई देखी कि वह कौन था और क्षमा मांगी और बचाए गए।

यहां तक कि एक विश्वासी भी ईशनिंदा कर सकता है, क्योंकि कोई भी विचार या शब्द जो परमेश्वर के नाम को बदनाम या बदनाम करता है वह ईशनिंदा है। ईश्वर की अच्छाई, बुद्धि, निष्पक्षता, सच्चाई, प्रेम या वफादारी पर सवाल उठाना ईशनिंदा का एक रूप है। वह सब अनुग्रह से क्षम्य है। विश्वासियों से बात करते हुए, युहन्ना ने कहा: यदि हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह विश्वासयोग्य और न्यायी है और हमारे पापों को क्षमा करेगा और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करेगा (प्रथम युहन्ना १:९)। यह हमें पाप करने का बहाना नहीं देता (रोमियों ६:१-१४), लेकिन विश्वासी मसीह में सदैव सुरक्षित रहते हैं (देखें Ms – विश्वासी की शाश्वत सुरक्षा)। ऐसा कोई पाप नहीं है जिसका भुगतान यीशु ने क्रूस पर अपना बहुमूल्य रक्त बहाकर न किया हो।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु द्वारा उन्हें मसीहा के रूप में अस्वीकार करने के अक्षम्य पाप के लिए फरीसियों की निंदा करने के तुरंत बाद, उन्होंने एक स्पष्ट सत्य को स्पष्ट करने के लिए एक संक्षिप्त दृष्टांत के साथ चेतावनी दी: आप किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति को उनके जीवन में आध्यात्मिक फल से जान पाएंगे। एक पेड़ अच्छा बनाओ और उसका फल अच्छा होगा, या एक पेड़ बुरा बनाओ और उसका फल बुरा होगा, क्योंकि पेड़ की पहचान उसके फल से होती है। हे सांप के बच्चों, तुम जो बुरे हो, कोई अच्छी बात कैसे कह सकते हो? क्योंकि मुंह वही बोलता है, जो मन में भरा होता है। अच्छा मनुष्य अपने में भण्डारित भलाई में से अच्छी बातें निकालता है, और बुरा मनुष्य अपने में भण्डारित बुराई में से बुरी बातें निकालता है। परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन हर एक को अपने कहे हुए हर खोखले शब्द का हिसाब देना होगा। क्योंकि तू अपने वचनों के द्वारा निर्दोष ठहरेगा, और अपने ही वचनों के द्वारा तू दोषी ठहराया जाएगा। (मत्ती १२:३३-३७) मुक्ति और निंदा शब्दों या कर्मों से उत्पन्न नहीं होती, बल्कि उनसे प्रकट होती है। वे किसी व्यक्ति की आध्यात्मिक स्थिति के वस्तुनिष्ठ, अवलोकन योग्य प्रमाण हैं।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, उत्तरी अटलांटिक में एक अमेरिकी नौसैनिक बल एक असाधारण अंधेरी रात में दुश्मन के जहाजों और पनडुब्बियों के साथ भारी युद्ध में लगा हुआ था। उन लक्ष्यों की खोज के लिए एक विमानवाहक पोत से छह विमानों ने उड़ान भरी, लेकिन जब वे हवा में थे तो वाहक को हमले से बचाने के लिए पूर्ण ब्लैकआउट का

Em – जो कोई भी पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करेगा उसे
कभी क्षमा नहीं किया जाएगा मत्ती १२:३०-३७ और मरकुस ३:२८-३० |
6

आदेश दिया गया था। वाहक के डेक पर रोशनी के बिना छह विमान संभवतः नहीं उतर सकते थे और उन्होंने उनके अंदर आने के लिए रोशनी चालू करने के लिए रेडियो अनुरोध किया। लेकिन क्योंकि पूरा विमान वाहक, अपने कई हजार लोगों के साथ-साथ अन्य सभी विमान और उपकरण खतरे में पड़ गए होंगे, किसी भी रोशनी की अनुमति नहीं थी। जब छह विमानों का ईंधन ख़त्म हो गया, तो उन्हें ठंडे पानी में उतरना पड़ा और चालक दल के सभी सदस्य अनंत काल के लिए नष्ट हो गये।

एक समय आता है जब परमेश्वर रोशनी बंद कर देते हैं, जब मोक्ष का अगला अवसर हमेशा के लिए खो जाता है। यही कारण है कि रब्बी शाऊल ने कुरिन्थ में विश्वासियों से कहा: अब ईश्वर की कृपा का समय है, यदि आप आज उसकी आवाज सुनते हैं – अब मुक्ति का दिन है (२ कुरिन्थियों ६:२बी; इब्रानियों ३:७)। जो पूर्ण प्रकाश को अस्वीकार करता है उसे न तो प्रकाश मिल सकता है – और न ही क्षमा। लोग अपने पापों के कारण नरक में नहीं जाते हैं। यीशु मसीह ने पहले ही क्रूस पर उनके सभी पापों के लिए भुगतान कर दिया है। पवित्र आत्मा को अस्वीकार करने के कारण वे नरक में जाते हैं।